Note : If you would like to view or download the entire book please go through home page of Jain eLibrary Website – www.jainelibrary.org and register your e-mail id (or sign in if previously registered).

Bhikshunyayakarnika

Folder No.	002672
Granth Name	Bhikshunyayakarnika
Author	Acharya Mahapragyaji
Publisher	Jain Vishwabharati Mahavidyalaya Ladnun
Edition	1
Year	2007
Pages	286

भिक्षुन्यायकर्णिका

फोल्डर नं.	००२६७२
ग्रन्थ	भिक्षुन्यायकर्णिका
मूल	आचार्य महाप्रज्ञ
प्रकाशक	जैन विश्वभारती महाविद्यालय – लाडनूँ
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	२००७
पृष्ठ	२८६

मुख्य टाईटल
भूमिका
सम्पादकीयम
पुरोवाक
विषयानुक्रम
प्रथम विभाग
- न्याय की परिभाषा ---------- १
- न्याय के अंग ---------- २
- न्याय की प्रवृत्ति का हेतु ---------- ३
- लक्षण और प्रमाण से अर्थसिद्धि ---------- ५
- लक्षण की परिभाषा ---------- ५
- लक्षणाभास की परिभाषा और प्रकार ---------- ७
- अव्याप्त लक्षणाभास की परिभाषा ---------- ७

अतिव्याप्त लक्षणाभास की परिभाषा -- ८
असंभवी लक्षणाभासकी परिभाषा --- ९
प्रमाण की परिभाषा --- १०
अयथार्थ ज्ञान के प्रकार -- ११
विपर्यय की परिभाषा -- ११
संशय की परिभाषा -- १२
अनध्यवसाय की परिभाषा -- १४
प्रामाण्य – निश्चय के प्रकार -- १५

द्वितीय विभाग

प्रमाण के प्रकार -- २१
प्रत्यक्ष की परिभाषा --- २४
पूर्ण प्रत्यक्ष – केवलज्ञान --- २५
अपूर्ण प्रत्यक्ष – अवधिज्ञान और मनः पर्ययज्ञान -- २६
अवधिज्ञान की परिभाषा --- २७
मनः पर्ययज्ञान की परिभाषा -- ३१
व्यावहारिक प्रत्यक्ष की परिभाषा --- ३३
अवग्रह की परिभाषा -- ३४
अवग्रह के प्रकार --- ३६
चक्षु और मन के व्यज्जनावग्रह का अभाव --- ३८
ईर्हा की परिभाषा -- ३९
अवाय की परिभाषा -- ४०
धारणा की परिभाषा --- ४१
अवग्रह, ईर्हा अवाय और धारणा की भिन्नता के कारण ------------------------------------- ४२
अवग्रह आदि के क्रम – ज्ञान का अभाव --- ४३
ईन्द्रिय की परिभाषा -- ४४
ईन्द्रिय के प्रकार -- ४५
निर्वृत्ति और उपकरण ईन्द्रिय की परिभाषा --- ४७
लब्धि और उपयोग ईन्द्रिय की परिभाषा --- ४८

तृतीय विभाग

परोक्ष की परिभाषा -- ५५
परोक्ष के प्रकार -- ५६
मतिज्ञान की परिभाषा --- ५६
मतिज्ञान के प्रकार -- ५६
स्मृति की परिभाषा --- ५७
प्रत्यभिज्ञा की परिभाषा -- ६०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तर्क की परिभाषा -- ६४
अनुमान की परिभाषा -- ६७
साध्य की परिभाषा -- ६८
साधन की परिभाषा -- ७०
अविनाभाव की परिभाषा --- ७१
सहभाव का निरुपण --- ७१
क्रमभाव का निरुपण --- ७२
विधि और प्रतिषेध के हेतु -- ७३
हेतु का प्रयोग --- ८२
हेत्वाभास के प्रकार -- ८३
असिद्ध हेत्वाभास की परिभाषा -- ८४
विरुद्ध हेत्वाभास की परिभाषा --- ८५
अनैकान्तिक हेत्वाभास की परिभाषा --- ८६
वचनात्मक अनुमान में दृष्टान्त, उपनय और निगमन का प्रयोग----------------------------- ८८
दृष्टान्त की परिभाषा --- ८९
दृष्टान्त के प्रकार --- ९०
अन्वयी दृष्टान्त की परिभाषा -- ९०
व्यतिरेकी दृष्टान्त की परिभाषा -- ९१
अन्वयी दृष्टान्ताभास के प्रकार --- ९२
व्यतिरेकी दृष्टान्ताभास के प्रकार --- ९२
उपनय की परिभाषा --- ९३
निगमन की परिभाषा -- ९४
प्रतिषेध के प्रकार --- ९५
प्रागभाव की परिभाषा -- ९५
प्रध्वंसाभाव की परिभाषा --- ९६
ईतरेतराभाव की परिभाषा -- ९७
अत्यन्ताभाव की परिभाषा -- ९८
निर्विकारता, अनन्तता, सर्वात्मकता और एकात्मकता की आपत्ति ---------------------------- ९९
कारण की परिभाषा --- १००
कारण के प्रकार -- १०१
उपादान कारण की परिभाषा --- १०१
निमित्त कारण की परिभाषा -- १०२
कार्य की परिभाषा --- १०५
कार्य के प्रकार -- १०५
चतुर्थ विभाग

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रुतज्ञान की परिभाषा --- १०७
आगम की परिभाषा --- ११०
आप्त की परिभाषा --- ११२
आप्त के प्रकार --- ११२
अर्थ – प्रतिपत्ति का हेतु शब्द --- ११३
वक्ता के गुण – दोष के अनुसार शब्द की यथार्थता और अयथार्थता -------------------------- ११६
स्याद्वाद की परिभाषा --- ११७
विधि – निषेध की कल्पना से स्याद्वाद के अनेक भंग -------------------------------------- ११९
सप्तभंगी --- १२१
प्रमाण – प्रतिनियत अर्थ का प्रकाशक --- १२६
प्रमाण – स्वार्थ और परार्थ दोनों --- १२६
सदवाद की परिभाषा --- १२७
पंचम विभाग
नय की परिभाषा --- १३२
नय के प्रकार --- १३४
द्रव्यार्थिक नय के प्रकार --- १३६
नैगम नय की परिभाषा --- १३८
संग्रह नय की परिभाषा --- १४०
संग्रह नय के प्रकार --- १४०
व्यवहार नय की परिभाषा --- १४२
पर्यायार्थिक नय के प्रकार --- १४३
ऋजुसूत्र नय की परिभाषा--- १४४
शब्द नय की परिभाषा --- १४५
समभिरुढ नय की परिभाषा --- १४६
एवंभूत नय की परिभाषा --- १४७
अर्थ नय का निरुपण --- १४९
शब्द नय का निरुपण --- १४९
पूर्ववर्ती और उत्तरवर्ती नयों में पार्थक्य --- १५०
प्रकारान्तर से नय के प्रकार --- १५२
निश्चय नय की परिभाषा --- १५३
व्यवहार नय की परिभाषा --- १५४
ज्ञान नय और क्रिया नय का निरुपण --- १५४
नयाभास की परिभाषा --- १५५
षष्ठ विभाग
प्रमाण का विषय --- १५९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत की परिभाषा -- १६३
असत की परिभाषा -- १६५
नित्य की परिभाषा -- १६५
अनित्य की परिभाषा -- १६६
सामान्य की परिभाषा -- १६६
विशेष की परिभाषा -- १६८
विशेष के प्रकार -- १६९
वाच्य की परिभाषा -- १७०
अवाच्य की परिभाषा -- १७०
अपेक्षाभेद से विरोधी धर्मों की संगति --- १७०
प्रमाण – फल की परिभाषा --- १७३
प्रमाण से प्रमाण – फल की भिन्नता – अभिन्नता --- १७४
प्रमाण और प्रमाण फल की अभिन्नता का निरुपण -- १७५
अवग्रह आदि की क्रमिकता से पूर्ववर्ती प्रमाण – उत्तरवर्ती फल ------------------------------ १७६
सप्तम विभाग
प्रमाता की परिभाषा -- १७९
चैतन्यलिंग की उपलब्धि से आत्मा का बोध -- १८२
भूतों में चैतन्यधर्म का अभाव -- १८३
उपादान और नियम का निरुपण --- १८४
असत के उत्पादान का अभाव --- १८४
मस्तिष्क चैतन्य के प्रयोग का हेतु, किन्तु मूल नहीं -- १८६
रक्त प्राणशक्ति का अनुगामी किन्तु चैतन्य का मूल नहीं ----------------------------------- १८७
आत्म – अस्तित्व का हेतु प्रेत्य का सदभाव -- १८८
पुनर्जन्म के सदभाव का कारण – चैतसिक आग्रह -- १८९
पूर्वाभ्यास की स्मृति--- १९०
पृथ्वी आदि में चेतना की सिद्धि -- १९१
त्रस प्राणियों में चेतना की सिद्धि -- १९३
प्रशस्ति श्लोका -- १९५
परिशिष्ट -- २०४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org